बजट बढ़ाने के साथ ही इस स्थिति को निम्न कदम उठाकर बदला जा सकता है जिससे रागिनी जैसी तमाम किशोर-किशोरियां शिक्षित हो सकें और अपने सपने पूरे कर सकें-

- ढांचागत सुविधाओं जैसे कार्यशील शौचालय आदि को बेहतर करके ड्रापआउट को रोका जाए।
- किशोरियों को बाहर निकलने को प्रोत्साहित किया जाए और उन्हें सुरक्षित माहौल दिया जाए। जिससे वो सार्वजनिक जगहों पर आसानी से आ-जा सकें।
- चाइल्ड प्रोटेक्शन पॉलिसी/कमेटी को पूरी तरह से कार्यशील बनाया जाए।
- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के साथ ही उद्देश्यपूर्ण शिक्षा के लिए कदम उठाए जाएं।
- किशोर-किशोरियों की शिक्षा और शिक्षा के लिए उनको प्रेरित करने के लिए उन पर केंद्रित योजनाएं बनाई जाएं।

दे ताली
बनेगी बात साथ-साथ

SUPPORTED BY
IKEA Foundation

Jan Vikas Sansthan
MAHARAJGANJ

ब्रेकथ्रू
www.inbreakthrough.tv
Breakthrough India @

ब्रेकथ्रू

एक प्रयास बदलाव की ओर

उत्तर प्रदेश में किशोर - किशोरी सशक्तीकरण कार्यक्रम

उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर की रहने वाली रागिनी भी 66 फीसदी उन्ही किशोरियों में से एक है जो यह मानती है कि लड़कियों को पढ़ना चाहिए, लेकिन रागिनी जैसी तमाम किशोरियों की चाहत तब दम तोड़ देती है जब उनकी उम्र 15-16 साल की होती है। इस उम्र में कदम रखते ही उनकी पढ़ाई रोक दी जाती है और कम उम्र में उनका विवाह कर दिया जाता है।

रागिनी जैसी तमाम किशोर-किशोरियों की जिंदगी बदल सकती हैं, उनकी शादी कम उम्र में न करके, उन्हें पढ़ने का अवसर देकर!

5 देश का हर पांचवा व्यक्ति किशोर - किशोरी की उम्र (10 - 19) का है।

3 देश का हर तीसरा व्यक्ति युवा है (10 - 24) है।

Source: Census 2011

उत्तर प्रदेश, किशोर-किशोरियों की संख्या के मामले में देश में प्रथम स्थान रखता है

किशोर-किशोरियों की जनसंख्या
₹4.89 करोड़

सम्पूर्ण जनसंख्या में प्रतिशत
19.3%

Source: Census 2011

उत्तर प्रदेश में बाल-विवाह की स्थिति

20-24 आयुवर्ग की विवाहित महिलाएं जिनकी शादी 18 साल से पहले हो गई
21.2%

25 - 29 आयुवर्ग के पुरूष जिनकी शादी 21 साल से पहले हो गई
28.8%

Source: NFSH-4/UP 2015-16

उत्तर प्रदेश में किशोर - किशोरी की शिक्षा के प्रति सोच

सूचक (इंडीकेटर)	11 - 19 आयुवर्ग	लड़कियां	लड़के
लड़कियों को कम से कम माध्यमिक शिक्षा को पूरा करना चाहिए		30.6%	36.9%
लड़कों को कम से कम माध्यमिक शिक्षा को पूरा करना चाहिए		21%	24%
लड़की किसी भी कक्षा तक अध्ययन कर सकती है, जिसमें वह पढ़ना चाहती है		65.5%	57.3%
लड़का किसी भी कक्षा तक अध्ययन कर सकता है, जिसमें वह पढ़ना चाहता है		75.4%	72%

AEP Base line data (Source: NRMC-2016)

किशोरों की अपेक्षा किशोरियां ज्यादा स्कूल छोड़ रहीं हैं।

ड्रॉप आउट	लड़के - लड़कियों का	लड़कियों का
11 - 14 आयुवर्ग	8.2%	9.9%
15 - 16 आयुवर्ग	21%	24.7%

Source: ASER 2016, Uttar Pradesh

किशोरियों की उम्र बढ़ने के साथ-साथ, उनकी स्कूल छोड़ने की संभावना बढ़ जाती है।

15 साल की उम्र के बाद किशोर-किशोरियों दोनों के स्कूल छोड़ने की सख्या बढ़ जाती है।

AEP Base line data (Source:NRMC-2016)

किशोरियों का स्कूल छोड़ने का कारण

स्कूल का घर से दूर होना
शादी हो जाना
घर के काम में सहयोग करना
स्कूल जाते समय यौन उत्पीड़न का सामना करना

किशोरों का स्कूल छोड़ने का कारण

स्कूल में बेहतर प्रदर्शन न करना
खेती में सहयोग
पैसा कमाने और काम के सिलसिले में दूसरे शहरों में चले जाना

AEP Base line data (Source:NRMC-2016)

ऊपर दिये गए कारणों से स्कूलों में 15 - 16 साल की उम्र के किशोर - किशोरियों की नामांकन दर भी लगातार घट रही है।

आयुवृद्धि और स्कूलों में नामांकन स्थिति (सरकारी स्कूलों में)

आयुवर्ग	नामांकन
11 - 16	63.3%
11 - 14	36.3%
15 - 16	27%

Source: ASER 2016, Uttar Pradesh

आयु में वृद्धि के साथ ही किशोर - किशोरियों के नामांकन में कमी देखी गई है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा शिक्षा बजट आवंटन से पता चलता है कि बजट आवंटन प्रतिवर्ष बढ़ रहा है लेकिन प्राथमिक शिक्षा में शिक्षा की गुणवत्ता में ज़रा भी सुधार नहीं हुआ है।

2003 - 04 में व्यय	2013 - 14 में व्यय
₹73044.93	₹365965.23

वृद्धि 500%

mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/statistics/PubExpdt-2013.pdf

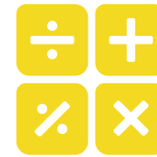

शिक्षा की गुणवत्ता।

प्राथमिक स्कूलों के बच्चे भाग (डिवीजन) करना जानते थे।

2010	2016
48.2%	25.5%

Source: ASER 2016, Uttar Pradesh

शिक्षा के लिए बजट आवंटन (मूलभूत, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक)

बजट आवंटन 2016 - 17 (करोड़ में)
₹49,607.93

बजट आवंटन 2017 - 18 (करोड़ में)
₹62,185.25

वृद्धि 25%

उच्च प्राथमिक शिक्षा के लिए बजट आवंटन

बजट आवंटन 2016 - 17 (करोड़ में)
₹9856.86

बजट आवंटन 2017 - 18 (करोड़ में)
₹9387.44

वृद्धि 4.8%

Source : Hindustan,17th July 2017 (Lucknow Edition)

स्कूल रिपोर्ट कार्ड के आंकड़ें भी बताते हैं कि उत्तर प्रदेश में किशोर-किशोरियों की शिक्षा को लेकर अभी और काम किये जाने की जरूरत है।

39	प्राथमिक स्तर पर उत्तर प्रदेश छात्र शिक्षक अनुपात के मामले में सबसे अधिक(39) है।
2,43,014	उत्तर प्रदेश स्कूलों की संख्या के मामले में 2,43,014 के साथ अव्वल है।
1,68,219	संविदा के आधार पर उत्तर प्रदेश में शिक्षकों की संख्या 1,68,219 सबसे अधिक है।
10,09,333	शिक्षकों की संख्या भी उत्तर प्रदेश में सबसे 10,09,333 अधिक है।
169857	सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों की संख्या भी उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक 169857 है।
22,223	एक शिक्षक वाले स्कूलों की संख्या उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक 22,223 है।
2718	10 या उससे कम बच्चों के नामांकन वाले स्कूलों की संख्या उत्तर प्रदेश में 2718 है।

http://schoolreportcards.in/SRC-New/FactsAndFigures/FactsAndFigures.aspx